International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 60-64

मामानि रइसम गोस्वामी की उपन्यास नीलकंठी ब्रज का विश्लेषणात्मक अध्ययन (असमीया उपन्यास के विशेष सन्दर्भ में)

जयन्त कुमार बोरो

विभागाध्यक्ष एवं असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोकराझार गवर्मेन्ट कॉलेज, कोकराझार, असम, भारत।

सारांश

नीलकण्ठी ब्रज उपन्यास में असमीया साहित्य की विशिष्ट लेखिका मामोनि रइसम गोस्वामी जी ने तत्कालीन भारतीय समाज की विडम्बनाओं को जिस तरीके से हमारे समाज में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है वह अनुठा है। लेखिका ने इस उपन्यास में समाज में विधवा नारी की समस्याओं को करुण से अभिव्यक्त किया है। इस उपन्यास की कथावस्तु ब्रजधाम से गई है। नारी हमारे समाज का सम्मान है लेकिन नारी को जिस रुप में इस उपन्यास में दिखाया गया है वह कहीं न कहीं हमारी समाजिक संगठन की भूल हैं। यह उपन्यास हमारी आस्थाओं पर प्रहार करता है। सौदामिनी, मृणालिनी, शशिप्रभा, तथा अन्य गुमनाम भरी जिन्दगी जी रही विधवा राधेश्यामियों जैसे नारी पात्रों पर आधारित यह उपन्यास हमारे समाज का हस्तामलक जैसा प्रतीत होता हैं। विधवा होना समाज की किसी नारी का दोष नहीं हैं। न ही किसी भी प्रकार से स्त्री पर विधवा बनने का दोष लगाया जाना उचित ही हैं। लेखिका का नारी का करुण पूर्ण चित्रण नारी के अस्तित्व के रक्षा के प्रश्न को उपस्थित करता है।

मूलशब्द : विधवा, सामाजिक, संगठन, अस्तित्व आदि।

प्रस्तावना

असमीया साहित्य की महिला लेखिकाओं में गोस्वामी जी का नाम शीर्ष स्थान पर रखा जाता है। ज्ञानपीठ विजयी लेखिका ने अपनी रचनाओं में अधिकतर समाज की विसंगतियों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। नारी की भी अपनी स्वतन्त्र सत्ता है, उसका भी अपना स्वाभिमान है, उसकी भी अपनी इच्छायें हैं, उसे भी समाज में पुरुष के समान अधिकार मिलना चाहिए। इन्हीं बातों को लेखिका ने अपनी रचनाओं वर्णित किया है। उपन्यासकार ने अपनी रचनाओं में जीवन के कटु सत्यों को उजागर किया है। एक साहित्यकार होने के नाते गोस्वामी जी ने स्वयं को सामाजिक दायत्वों को पूरा निभाया है। भारतीय और विश्व साहित्य जगत में लेखिका ने असमीया साहित्य को एक अलग पहँचान देने का प्रयास किया हैं। गोस्वामी जी स्वयं कहती है कि– "I try to write from the direct experiences of my life- I only mould these experiences with my imaginations".

सुदीर्घकाल वृन्दावन में वास करने के पश्चात् प्राप्त अनुभव के द्वारा लेखिका ने प्रस्तुत उपन्यास को निर्माण किया था। वृन्दावन में वास कर रहे एक–दो लोगो के वास्तविक जीवन के के एक–दो प्रसंगों को अवलम्बन के रुप में लेकर इस उपन्यास के कुछ एक चरित्रों को भी निर्माण किया गया था। लेकिन लेखिका ने स्वयं घोषणा किया है कि इसके अधिक पात्र ही कल्पणा पर ही आधारित हैं।

मामोनि रइसम गोस्वामी के स्वामी माधेवन आयेंगर के मृत्यु के पश्चात् उनके जीवन में निराशा और करुणा ने अपना घर बना लिया था। लेकिन उपेन्द्र चन्द्र लेखारु जैसे पंडित व्यक्ति के निर्देश में रामायणी साहित्य पर शोध करने के लिए वृन्दावन चली जाती है। यह एक पवित्र धाम है, जिसे समस्त भारतवासी वन्दना करते है। लेकिन गोस्वामी जी को वृन्दावन में एक विचित्र समाज का दर्शन होता है। उसी स्थान में रहकर उन्होंने इस उपन्यास को पृष्ठभूमि को तैयार किया था।

सन् 1973 ई. में नालकंठी ब्रज की रचना की गई थी। उपन्यास की पृष्ठभूमि ब्रजधाम के लिया गया है। ब्रजधाम में रचित यह उपन्यास एक कालजयी असमीया कृति है। एक साक्षात्तकार में इस उपन्यास के सन्दर्भ में वे स्वयं कहती है कि–

> "वृन्दावनत थाकोंते मइ खुब पढ़ाशुना करिछिलों। तात थाकोंतेइ मोर नालकण्ठी ब्रजर समल गोताइछिलो।" [1] (लिप्याणतरण)

अर्थात् वृन्दावन में रहते समय में मैं पढ़ाई किया करती थी। वही पर रहते समय ही मैंने नालकंठी ब्रज की सामाग्रियों को संग्रह किया था।

उद्देश्य

मामोनि रइसम गोस्वामी जी ने स्त्री अस्मिता की लड़ाई को किसी आन्दोलन के माध्यम से नहीं अपितु अपनी रचनाओं से परिचित करवाया हैं। भारतीय संस्कृति में नारी का जीवन जवलन्त समस्याओं को ले कर खड़ा हैं। नारी आज भी न्याय के लिए अपने हक की लड़ाई लड़ रही है। गोस्वामी जी ने पुरुष सत्ता के विरोध में अपनी स्वकल्पित उपन्यासों के पात्रों को इसके लिए तैयार किया है। अपने चरित्रों में कहीं न कहीं लेखिका ने अपने को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। नारी की विडम्बना यहीं है कि उसे किसी पर आश्रित रहना पड़ता है। लेकिन लेखिका ने बोल्डनेस के द्वारा लोगो तक एक नारी की विचारधाराओं को पहुचाया है कि पति के मृत्यु के पश्चात् किसी नारी जीवन क्रम समाप्त नहीं हो जाता। नारी का विधवा जीवन किसी का मौहताज नहीं है उसे भी अधिकार है खुल कर जिने का। नारी को नारी के नजरिये से देखना ही प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य है।

शोधविधि

प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है तथा यह विषय समीक्षात्मकता पद्धति की भी मांग रखता है।

शोध सामाग्री

प्रस्तुत आलेख की शोध सामाग्री विविध प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर प्राप्त किया गया गया है। गोस्वामी जी द्वारा रचित उपन्यासों (मूल भाषा में और अनुदित) को आधार ग्रन्थों को उपयोग के रुप में लिया गया हैं।

मामानि रइसम गोस्वामी की उपन्यास नीलकंठी ब्रज
निलकण्ठी ब्रज उपन्यास में लेखिका ने हमारी समाज विसंगतियों को उजागर किया है। लेखिका ने यथार्थवादी दृष्टिकोण के द्वारा ब्रजधाम में इस उपन्यास का निर्माण किया। इक्कीसवीं सदीं में हमारा समाज जिन विसंगतियों में फसा हुआ है वह हमारे लिए लज्जा का विषय है। हम जिन मिथ्याचार, आडम्वर तथा रुढ़ियों को गले लगा फिरते है क्या वे हमारी सभ्यता का विकास है अथवा विडम्बना ? लेखिका ने इस उपन्यास में विधवा नारियों की जिन करुण स्थिति एवं अवस्था का वर्णन किया है वह बहुत ही मार्मिक है। इस उपन्यास की कथावस्तु की मार्मिकता पर यदि विचार किया जाए तो उसका एकमात्र कारण लेखिका का ययार्थवादी दृष्टिकोण है। लेखिका ने एस उपन्यास के द्वारा भारतीय समाजिक विद्रुपताओं का करुण चित्रण किया है। उपन्यास के नारी पात्र सौदामिनी, शशिप्रभा, मृणालनि, अनुपमा देवी, विधवा राधेश्यामी और अनन्य पात्रों आदि के ईर्द–गिर्द इसकी कथा घुमती रहती है। पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों के समान नारी का सम्मान नहीं होता। यह बात सोलह आना सहीं है। पुरुष प्रधान समाज नारी को सदैव अपनी प्रयाग की वस्तु के रुप में व्यवहार करता आ रहा है। उपन्यास को नारी पात्र सौदामिनी को उसके माता–पिता (अनुपमा देवी और डॉ. राय चौधरी) ब्रदधाम ले आते है। सौदामिनी एक पूर्ण यौवन को प्राप्त युवती थी लेकिन उसकी जीवन की विडम्वना यही है कि उसके पति सुबत का निधन हो गया है। जिस कारण उसे वैविध्य जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ता है। लेकिन सौदामिनी को इसी बीच एक ईसाई युवक से प्रेम हो जाता है। जिसके लिए सौदामिनी को ब्रजधान जाना पड़ता है ताकि उसका मानसिक परिष्कार हो सके। क्योंकि हमारा धर्मभीरु समाज जातिवाद के गहरे गुहा में फंसा हुआ है–

> "उनकी इकलौटी बेटी– सौदामिनी असमय ही विधवा हो गयी थी। पर इतने से ही नहीं खैरियत नहीं हुई। कच्ची उम्र में विधवा होने के बाद भी एक ईसाई नौजवान से मेलजोल बढ़ा बैठी। कट्टर सनातनी धर्मभीरु रायचौधरी–परिवार के लिए यह एक अल्पकालीन आघात था।" [2]

समाज की व्यवस्था के कारण ही सौदामिनी को ब्रज में लाना पड़ता है लेकिन वहा की स्थिति से उसे घुटन होने लगता है। और विद्रोह करना प्रारम्भ कर देती है। लेखिका ने उपन्यास में ब्रजधाम में रहने वाली सारी विधवा स्त्रियों को प्रेतात्माएँ कहाँ है। ये विधवायें राधेस्वामी स्त्रियाँ है। प्रेत्तात्मा कहने से यह आशय है कि सारी की सारी विधवाओं की स्थिति प्रेत की भाँति सी हो गई थी। उपन्यासकार ने उपन्यास के कथानक के प्रारम्भ में ही ऐसे एक पात्र का परिचय कराया है जिसका नाम गौतम पांडा उर्फ चरण बिहारी है। जो अपने जवानी के दिनों में ब्रजधाम आयी हुई गरीब और लाचार स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करता था।

> "उस समय चरण बिहारी बाँका नौजवान हुआ करता था वह लम्पटों के साथ घूमा करता था। जिस प्रकार कसाई जानवर को काटने से पहले उसे टटोलकर देखता है, वैसे ही उस लम्पट–मंडली के लोग उनके अंग–प्रत्यंग की जाँच पड़ताल करते थे उनके शरीर की बनावट में कहीं कोई कमी नहीं थी। उन कम उम्र की विधवाओं की मुख्य समस्या थी जो जून की रोटी।" [3]

भगवान कृष्ण की इस लीला भूमि में समाज का जो वीभत्स दृश्य अंकन हुआ है उसे देखकर उस स्थान के प्रति लोगो को घृणा का अमुभव होने लगता है। पुरुषों का स्त्रियों के प्रति कामुक प्रवृति को लेखिका ने जिस प्रखरता से से वर्णित किया है वह असाधारण सा लगता है।

> "भगवान कृष्ण के लीला–स्थल वंशीवट के नीचे ब्रजबिहारी ने उन पन्द्रह वर्षीया कम–उम्र युवतियों के खुले स्तन देखे थे– पानी से भीगी हुई फिसलन वाली मिट्टी की तरह पसीने से सराबोर अनावृत वक्ष। वैसी ही लम्पट मंडली काशी–द्वारका आदि तीर्थ स्थानों पर भी इसी तरह चीते के समान घात लगाये घूमा करती थी।" [4]

उक्त पंक्तियों से यह प्रश्न उपस्थित हो जाता है कि क्या भारत के सभी तीर्थों में ऐसा ही दृश्य प्रायः देखने को मिलता है ? गौतम पंडा जैसे नीच पुरुषों से एक नारी किया उम्मीद कर सकती है। उपन्यासों में वर्णित पुरुषों का व्यवहार स्त्रियों को लांछित ही करता है। पुरुष प्रधान समाज में पुरुषों को स्त्रियों को केवल भोग्य की सामाग्री के रुप में प्रयोग करना ही अपना पुरुषार्थ समझता है। पृत्त सत्ता समाज में स्त्रियों को अपने स्वेच्छानुसार जीने का अधिकार कम दिया जाता है। इस बात को अन्देखा नहीं किया जा सकता। राधेश्वामी विधवायें, सौदामिनी, शशिप्रभा, मृणालिनी आदि के आस–पास ही उपन्यास का कथा विस्तार होता है। इस उपन्यास में लेखिका ने जिन समस्याओं को उल्लेख किया है। वह हमारे सामज में आज भी व्याप्त है। सौदामिनी को माता–पिता दोनों ने उसकी इच्छाओं को कद्र किये बिना उसे ब्रजधाम में ले जाती है। परन्तु राधेश्वामी और शशिप्रभा तो विधवा स्त्री हैं उनके सर पर किसी पुरुष की छाया नहीं हैं जिस कारण ब्रजधाम में उन्हें बार–बार लांछित होना पड़ता हैं। कभी आलमगढ़ी के साथ और कभी अन्य पुरुषों का प्रस्ताव देना तो शशि के जीवन की विडम्बना बन गयी थी। ब्रजधाम में पंडे और पुरोहित अपने साथ लाचार और बेबस विधवा स्त्रियों को साथ रखा करते थे। लेखिका ने उल्लेख किया है कि किस प्रकार आलमगढ़ी और अन्यलोग विधवाओं को साथ रखा करते थे।

> "शशिप्रभा नाम की एक कम उम्र विधवा मंदिर के कामकाज में आलमगढ़ी की मदद किया करती थी। आखिर में वह आलमगढ़ी के संग एक ही कोठरी में रहने लगी थी पर उसे लेकर आवमगढ़ी को सीढ़ी पर बैठकर गजक खाने वाले लड़कों से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं थी। और भी लोग थे, कई ऐसी विधवाओं को रखे हुये थे। मरते वक्त सिर्फ दो विधवायें ही बेफिक्र होकर मरी थीं क्योकि पुजारियों ने उपनी इन रखैल विधवाओं का क्रिया कर्म किया था" [5]

बज्रधाम के सारे पुरोहित और पंडा विधवाओं को अपने रखैल के रुप में रखा करते थे। जो इस बात का द्योतक है कि पुरुष नारी को कितना अवला मान कर चलता है। उपन्यास में कई ऐसे कारुणिक प्रसंगों को भी लेखिका ने उल्लेख किया है जो उपन्यास की कथावस्तु को रोचक किये रखता है।
बिहारी कुंज के मालिक कृष्णाकान्त ठाकुर अपनी जवानी के दिनों में वेश्याओं पर सार धन उड़ा देते थे। जिस कारण उसकी बेटी मृणालिनी आजीवन अविवाहित रहती है। उपन्यास में मृणालिनी का जीवन करुणा और विडम्बनाओं से भरा मालुम पड़ता है। मृणालिनी उपने माता–पिता के संग सारा कुछ बेच कर ब्रजधाम में चली आती है। लेकिन मृणालिनी अपने विडम्बना को व्यक्त करते हुये कहती है कि –

> "वह अन्धा बूढ़ा ही इस पूरी यातना की जड़ है। उसने हम सबको बर्बाद कर दिया है। अपने जीवन भर उसने हमें आधापेट

खिलाया और उपनी कमाई का अधिकांश भाँग पीने में लगा दिया, फिर उसे इस जगह पहुँचा दिया गया।" [6]

मृणालिनी की जीवन नर्क की भाँति बना देने पीछे उसके पिता का ही हाथ है। एक पुरुष प्रधान समाज हमेशा से नारी जाति का प्रयोग वासना की पूर्ति के उद्देश्य से ही करता आ रहा है, जो कदाचित् गलत है। मृणालिना राधेश्वामियों को सम्बोधित करती हुई कहती है कि

"तुम बताओं, क्या मैं माँ नहीं बन सकती थी ? क्या मैं एक शिशु को जन्म नहीं दे सकती थी ? मुझे क्यों मजबूर कर दिया गया कि मैं सारा जीवन कुछ न करके इन दो प्रेतों की रक्षा करती रहुँ ? क्या तुम में से किसी ने मेरे जैसा सुख भोगा है ? तुम, जो झोपरों में गरीबी और भुखमरी में अपना सारा जीवन जी रही हो, मेरी परिस्थिति का दुमने सामना किया है ? तुमसे से कोई ?" [7]

मृणालिनी यहीं दुख व्यक्त करती है कि कदाचितु वह भी माँ बन सकती थी, उसकी भी विवाह हो सकती थी लेकिन उसके पिता की व्यभिचारी प्रवृत्ति ने उसे बर्बाद करके रख दिया। लेखिका ने नारी चरित्रों के विविध पक्षों को उजागर करने का प्रयास किया हैं। मृणालिनी न तो विवाहित और न ही विधवा। परन्तु उसका जीवन किसी विधवा से कम भी नही लगता।

मृणालिनी के पैतृक मंदिर बिहारी कुंज का पुजारी आलमगढ़ी अपने साथ शशि नाम की एक कम उम्र की विधवा को रखैल के रुप में रखता है। वह उससे विवाद नहीं करता। लेखिका शशिप्रभा के जीवन की विडम्बनाओं को स्पष्ट रुप से करने का प्रयास किया है। शशिप्रभा कम उम्र की विधवा थी उसकी इसी विडम्बना ने उसे ब्रजधाम पहुँचा दिया। जहाँ उसे नर्कीय जीवन का भोग करना पड़ता है। बिहारी कुँज के बिक जाने के बाद आलमगढ़ी चला जाता है। आलमगढ़ी का शशि को छोड़ जाने के पश्चात् एक विधवा अवला पर अन्य पुरुषों की नजर पड़ती है जो उसे आधी रात को अपना प्रस्ताव देती है कि उसे उसके साथ चलना है। वह अजनवी पुरुष शशि को प्रस्ताव स्परुप यह कहता है कि -

"सच मानो आलमगढ़ी ने तुम्हारे पास मेरा आना स्वीकार कर लिया है। यह पूर्णतः तुम पर है कि तुमने अपने को उससे अलग कर लिया या नहीं, किन्तु मैं यहाँ एक प्रस्ताव के साथ आया हूँ। मेरा भी एक मन्दिर है और मुझे मदद के लिए एक औरत चाहिए। तुम मुझे मदद दे सकता हो जि तरह आलमगढ़ी को तुमने दी। यहु जरुरत पड़ी, तो तुम मेरे साथ हो सकती हो। सच मानो, आसपास के सब लोग तुम्हारी भयावह स्थिति जानते हैं। वे जुम्हारी कठिनाइयों का फायदा उठा सकते है और मैं स्वयं ऐसा व्यक्ति नहीं हूँ कि तुम्हारा रुखा जवाब बर्दास्त कर सकूँ। मैं अपनी पूरी शक्ति लगा दूँगा। [8].

वह व्यक्ति शशि को बल पूर्वक अपने साथ ले जाने के लिए भी हिचकता नहीं। यह पुरुष की कैसी मनोवृत्ति है जो सदैव एक अवला कहीं जाने वाली नारी पर अपना पुरुषत्व प्रदर्शित करे। वह कैसे भी शशि को अपने साथ ले जाने के लिए प्रयास करता है और एक अकेली असहाय औरत को प्रस्ताव स्वरुप भय दिखाने का प्रयास करता है।

"मेरे प्रस्ताव को ठुकराओगी तो पछताओगी। तुम निराश्रित मर जाओगी। तुम्हें भिखारी या उससे भी बुरी स्थिति के लिए मजबूर कर दिया जाएगा। इससे पहले कि वो लालची भेड़िए तुम पर काबु पा लें– मैं शान्त पुरुष हूँ। मैं लोभी नहीं हूँ। क्या तुम नहीं जानती कि एक लोभी भेड़िया अपने शिकार की हड्डी–चमड़ी कैसे गटक लेता है !" [9].

पुरुषों का स्त्रियों के प्रति अमानवीयता का व्यवहार ही नारियों के मध्य पुरुषों के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न करवाता है। पुरुष प्रधान समाज में सभी निर्णय पुरुषों के द्वारा ही दिया जाता है और उन निर्णयों को हमेशा स्त्रियों को मानने को मजबूर कर दिया जाता है। अगर हम प्रस्तुत उपन्यास की नायिका पर विचार करे तो सौदामिनी को भी उपन्यास की नायिका के रुप में वर्णित नहीं किया जा सकता। क्योकि यह उपन्यास एक समस्या प्रधान उपन्यास है। सौदामिनी ने किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान प्रस्तुत नहीं किया हैं अपितु उन समस्याओं के प्रति कभी हार नहीं मानती। लेखिका ने सौदामिनी के माध्यम से ब्रजधाम में व्याप्त तमाम विसंगतियों को उजागर करने का प्रयास किया है। लेखिका ने सौदामिनी के चरित्र को प्रारम्भ से लेकर अंत तक बरकरार रखा है। सौदामिनी अपनी अस्तित्व की लड़ाई लड़ना चाहती है। क्योंकि उसके माता–पिता उसे अपने इच्छाओं के विरुद्ध ब्रजधाम लाती है। ब्रजधाम में सौदामिनी का पिता अस्पताल खोल कर गरीव और लाचार की मद्द के लिए आगे आते है और साथ ही अपनी बेटी की मानसिक परिष्कार में भी लगी रहती है। लेकिन एक दिन सौदामिनी कहती है कि–

मैं दूसरो के दया पर आश्रित रहकर अपना सारा जीवन नहीं बिता सकती। मैं महान नारी नहीं हूँ कि तुम लोगों की करह जनहितकारी काम करते हुये जीवन काट दूँ। मैं स्वाधीन हूँ। मै किसी से नहीं डरती। तुम लोग यदि यह समझ रहे हो कि मैं बदल गयी हूँ तो यह तुम्हारी भूल है। रायचौधरी की ओर उँगली दिखाकर वह चीख उठी, "तुम लोग पाखंडी हो । कसाई जैसे लगते हो तुम सब मुझे।" [10].

सौदामिनी जिस मानसिक अवस्था का शिकार थी इससे उसकी माता–पिता भली भाँति परिचित थे। लेकिन सामाजिक मान्यताओं और आचार–विचार के कारण उसे स्वीकृति नहीं दे रहें पा रहे थे कि एक हिन्दु किसी ईसाई से प्रेम करे। सौदामिनी के पति के गुजर जाने के बाद उसे एक ईसाई युवक से प्रेम हो जाती है। लेखिका ने सौदामिनी के माध्यम से एक गहरे प्रश्न को उठाना चाहती है। वह प्रश्न लगभग विधवाओं का पूर्ण विवाह जैसा ही है। जब सौदामिनी को उपन्यास के पुरुष पात्र गौतम पांडा (चरण बिहारी) पुछता है कि क्या तुम्हें पति की याद नहीं आती। सौदामिनी उत्तर देती है कि–

"उनके चेहरे की स्मृति धूमिल पड़ चुकी है। अतीत पर धूल जम गयी है। फिर कभी–कभी लगता है, वहीं यादें ही सब कुछ हैं। उसके बाहर सब कुछ शून्य है।" [11].

एक नारी पति के साथ आजीवन रह सकती है लेकिन एक विधवा नारी की स्थिति इससे विपरित होती है। सौदामिनी नील कंठी ब्रज की एक ठवसकदमे चरित्र है जो अपनी बात को बेबाकी से कहती है। सौदामिनी ईसाई प्रेमी को अपने विधवा जीवन की प्रेरणा के रुप में स्वीकार करना चाहती है। इसीलिए वद गौतम पांडा से कहती है कि–

"अभी आप जिस ईसाई की बात मुझसे कर रहे थे। उनसे अनोखी प्रेरणा मिली है। उनकी उपस्थिति ही मुझसे अनोखी प्रेरणा देती है, जिसे मैं समझ नहीं सकती। आप भी ठीक से

समझ नहीं पाएँगे। धरती का कोई भी इन्सान समझ नहीं पाएगा। हालाँकि मैने उनसे वैसा गहरा प्रेम नहीं किया है, फिर भी वे है वे मेरे लिए हैं। अब बोलिए, क्या मेरे जैसी पवित्र नारी उस ब्रज भूमि में पहले नहीं आयीं ?" [12].

लेखिका ने ब्रजधाम की समस्याओं की चर्चा की है। ब्रजधाम हमारी आस्था की प्रतीक है। लेकिन उसमें आने वाली विधवा स्त्रियों के साथ जो व्यवहार किया जाता है उससे उस देवत्व भूमि को शर्मसार होना पड़ रहा है। लेखिका ने सौदामिनी के माध्यम से यह कहलवाया है कि यह ब्रजधाम महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं है।

"आजकल ब्रज में प्रत्येक व्यक्ति संकटपूर्ण बना हुआ है। अब यह पुरातन स्वर्ग–सा सुरक्षित न रहा। वह ब्रज के पुराने समय की रेत में खो गया है। आज प्राचीन स्थान की गली–गली में मानव लोथड़े के लालची भेड़िये थे। कोई महिला सुरक्षा के बिना घर से बाहर जाना सुरक्षित नहीं समझती थी। कितना अपमानजनक!" [13].

एक विधवा नारी को समाज हमेशा से विविध नियमों के आधार पर संचालित करना चाहता है। हमारी समाजिक संगठन को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि विधवाओं के प्रति कठोर व्यवहार करें। समाज की बात छोड़ देने पर भी परिवार के लोग विधवा के पीछे ही लगा रहता है। सौदामिनी की आत्मा विधवा जीवन के आवरण से कुण्ठित होकर कहती है कि–

"विश्वास करो मैं अभी भी हाड़–मांस की मात्र औरत हूँ। सासारिक आवेशों और इच्छाओं से धूसरित हो गयी हूँ। इसके बाद भी मैं किसी प्रकार व्यवहार परिवर्तन दूर–दूर तक नहीं देख रही हूँ। मुझमें महानकार्य करने का आत्मविश्वास है ही नहीं। बचपन से ही एक खास प्रकार की खिन्नता मेरा पीछा कर रही है। मेरे अस्तित्व का एक भाग बन कर, मानो मेरे अस्तित्व की अभिन्न श्वास हो, मेरी आशाओं और भयों में मेरे सुखों और दुःखों में। केवल एक साल के छोटे से अर्से में मैं इससे राहत ले पायी हूँ और वह एक साल मेरे अन्तरंग भाग में आज भी झकाझक चमकता है। केवल उस वर्ष के दरम्यान मेरी आत्मा स्वयं उसकी मालिक रही और आज मैं मन्दिर–मन्दि भटक रही हूँ। केवल अपने भाग्यवान जीवन के अमूल्य कुछ दिन वापस पाने के लिए। दिन गुजरते जा रहे हैं और मेरा शरीर और आत्मा शुष्क एवं बदरंग होती जा रही हैं, जैसे पुराने वस्त्र। " [14].

लेखिका ने सौदामिनी के माध्यम से एक नारी के जीवन को मनोवैज्ञानिक आधार पर नारी की अस्तित्व की बात को स्पष्ट करना चाहा है। लेखिका ने इस उपन्यास में नारी की विडम्बनाओं को कुशलता के साथ चित्रित करने का प्रयास किया है। नीलकंठी ब्रज दृ सौदामिनी, मृणालिनी, शशिप्रभा, राधेश्यामी स्त्रियों की कहानी है। अनेक अनाम विधवाओं के बीच सौदामिनि नीलकंठी ब्रज उपन्यास में केन्द्रिय चरित्र की भूमिका को निर्वाद करता है। विधवाओं के जीवन की भयावहता पाठकों को विचलित कर देती है। पुरुषवर्चस्व की घृणित परिणतियाँ उन स्त्रियों का शोषण करती है जिन्हें लेखिका ने ब्रज में रहने वाली प्रेत्मात्माएँ कहाँ हैं। ये विधवायें राधेश्यामी स्त्रियाँ है जिनकी हँसी भी भीषण है
यह उपन्यास जिन्दगियों का सार–असार को व्यक्त करता है रुढ़ियों और सामाजिक बेड़ियों में छटपटाते स्त्री जीवन के यथार्थ कहानी को भी प्रकट करती है। अनाम राधेश्यामियों का जीवन धार्मिक आस्था के नाम पर दारुण अंधकार के गर्त में चला जाता हैं। उनकी स्थतियाँ इतनी भीषण है कि वे जीते जी नर्क का जीवन जीती है। ये राधेश्यामी स्त्रियाँ कुछ रुपये जमा कर इसलिए रखना चाहती है क्योंकि जीवन के अन्तिम दिन में उनका उस रुपये से दाह संस्कार हो सके। लेकिन कभी कोई दलाल और कोई अन्य आ कर उसे भी छिन कर ले जाता है। राधेश्यामी ब्रजधाम में वैविध्य जीवन के नाम पर विविध मानसिक यातनाओं का शिकार होती है। ब्रज में मृत अवस्था में विधवाओं को चौन नहीं है। कि किस प्रकार एक पंडो का दलाल आकार मृत अवस्था में वृद्धा विधवा को टटोलता है। उसका यह व्यवहार अमानुष्ता और जीवन को हेय सिद्ध करने वाला हैं।

"दलाल ने मृत वृद्धा के अस्थि–पंजर को टटोला, क्या पता उसकी कमर या बाँह के किसी हिस्से में बंधा हुआ सोने या चाँदी की ताबीज मिल जाए। कुछ मिला। दलाल ने कमर के नीचे से कुछ खींच लिया। झटके के कारण वृद्धा का शरीर अधनंगा होकर एक ओर पलट गया । [15]

क्या एक मनुष्य मनुष्य के प्रति ऐसा भी व्यवहार कर सकता है ? ऐसा मनुष्य मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। वह नर रुप में पिशास है। ऐसा अनुभव होता है कि हमारे समाज में विधवा होना कोई पाप है। दलाल का उस वृद्धा के शरीर को दाह संस्कार न करने के कारण उसका अमानवीयता का भाव ही प्रकट करता है। दलाल कहता है कि दृ "मैं मुर्दा ढ़ोने वाले चार आदमियों को बुलाता हूँ। वे इसे घसीटकर यमुना में फैक देगे।" ब्रज में पुरुष की ऐसी मानसिकता अमानवीयता को परिभाषित करता है। उपन्यास में ब्रज के पुरुषों ने सदैव नारियों को हेय की दृष्टि से ही देखने का प्रयास किया है।
राधेश्यामियों की स्थिति इतनी दयनीय थी कि उसके पास खाने तक कुछ भी नहीं रहता है इसलिए एक दिन एक राधेश्यामी सौदामिनी से कहती है कि–

"हमारे खाने के लिए कुछ दान–पुण्य कर जाओं। तुम लोग तो खाने के लिए जीवित हो। परन्तु हमें जीवित रहने के लिए खाने दो।'' [16].

लेखिका ने राधाश्यामी विधवाओं का जिस रुप में विर्णित किया है वह काफी मार्मिक एवं हृद्यस्पर्शी है। आस्था के नाम पर शोषण करना घोर पाप है। लेखिका ने कहा है कि–

"भुखे पेट भी उन्हें गाना होगा। गला बैठने को हो, तब भी गला फारकर चिल्लाना होगा। राधा–माधव के प्रेम अनुराग के गीत गाने ही होंगे। वियोग के आसूँ बहाते हुये उन्हें उद्धव के निकट जाकर कृष्ण का संदेश सुनाना ही होगा। निधु–वन, निकुंज वन और धीर समीर घाट पर कृष्ण के संधान में व्यग्र होना ही पड़ेगा। [17]

समाज में जिस ज्वलंत प्रश्नों को लेखिका ने स्पष्ट करने का प्रयास किया है, वह यथार्थ के धरातल पर आधारित है। कैसे एक मा, बहन, पत्नी वाली स्त्री विधवा होते ही एक ही क्षण में देय की दृष्टि का सामना करना पड़ता है। हमारा समाज जिस नारी सशक्तिकरण की बात करता है क्या उसे हम सच्चे अर्थों में सम्मान कर पाये हैं ? यह एक गम्भीर प्रश्न है। आज जिस नारीवादी की चर्चा उठा है वद नारी की सुरक्षा और अधिकार से सम्बद्ध है। नारी का भी पुरुषों सा समान अधिकार हैं। किसी नारी की विधवा होना नारी का विडम्बना नहीं है, अपितु वद हमारे समाज की विडम्बना है। क्योंकि हमारे समाज के पास नारी को नारी की दृष्टि से देखने वाली दृ

ष्टिकोण का अभाव है। नारी वादी विचार धारा को विकसित करते हुये यह कहा जा सकता है कि - "In the simplest of words it is basically the creation of an environment where woman can make independent decisions, on their personal development as well as shine as equals in society [18].

उपसंहार

उपन्यासकार गोस्वामी जी ने ब्रजधाम में घटित घटनाओं को बोल्डनेस् के द्वारा अभिव्यक्त किया है। पुरुष प्रधान समाज ने नारियों को सदैव अपना रखैल, भोग की सामाग्री आदि ही समझा हैं। लेकिन सौदामिनी चरित्र के माध्यम से लेखिका ने ब्रजधाम की धार्मिक आस्था में छिपे काली करतुतों को व्यक्त कर समाज के सम्मुख रख दिया हैं। उपन्यास में वर्णित विसंगतियों के प्रति आस्था तो लेश मात्र भी नहीं रह जाता, अपितु घृणा का भाव ही उपजने लगता है। आज समय बदल रहा है। समय के आधार पर हमे अपने विचारों को भी बदलना होगा। नारी भी समाज का अभिन्न अंग है उसके अभाव में एक सुन्दर समाज, परिवार की कल्पना नहीं की जा सकती।

पादटीका

हुसेइन, निकुमनि, सम्पादक, मामोनि रइसम भाषा आरु प्रतिभा, होमेन बरगोहाइ, , एइ जीवनटो मोक नालागेइ, आन एटा जीवनो नालागे (साक्षात्कार), पृष्ठ संख्या–27.

1. नीलकंठी ब्रज :– इन्दिरा गोस्वामी, हिन्दी अनुवादक– दिनेश द्विवेदी, पृष्ठ संख्या– 7.
2. वहीं पृष्ठ संख्या– 10.
3. वहीं पृष्ठ संख्या– 10.
4. वहीं पृष्ठ संख्या– 26.
5. वहीं पृष्ठ संख्या– 93.
6. वहीं पृष्ठ संख्या– 93.
7. वहीं पृष्ठ संख्या– 54–55
8. वहीं पृष्ठ संख्या– 55
9. वहीं पृष्ठ संख्या– 45.
10. वहीं पृष्ठ संख्या– 49
11. वहीं पृष्ठ संख्या– 50.
12. वहीं पृष्ठ संख्या– 58.
13. वहीं पृष्ठ संख्या– 66–67.
14. वहीं पृष्ठ संख्या– 14.
15. वहीं पृष्ठ संख्या– 17–18.
16. वहीं पृष्ठ संख्या– 18.
17. www.google.com/ Woman Empowerment/Google search. 20.9.16

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

असमीया

1. भराली, हेमन्त कुमार, सम्पादक, मामानि रइसम गोस्वामीर उपन्यास समग्र, प्रथम प्रकाश जुलाई, 2011, प्रकाशक– श्री अनन्त हजारिका, बनलता, पानबजार, गुवाहाटी– 01, असम।
2. नेउग, डॉ. बिभा दत्त, सम्पादक, मामनि रइसम गोस्वामी स्मरण सृजन मनन, प्रथम संस्करण– जनवरी, 2012, प्रकाशक– नव कलिता, किरण प्रकाशन, डि. के मार्केट कमप्लेस, धेमाजि चारिआलि, असम।
3. ठाकुर, डॉ. नगेन, सम्पादक, एश बछरर असमीया उपन्यास, प्रथम संस्करण– नवम्बर, 2000, प्रकाशक– ज्योति प्रकाशन, पानबजार, गुवाहाटी– 01, असम।
4. गोस्वामी, मामोनि रइसम, आधा लेखा दस्तावेज, संस्करण– 2008, प्रकाशक–श्री अजय कुमार दत्त, स्टुडेन्ट स्टोर, कलेज होस्टेल रोड, गुवाहाटी– 01, असम।
5. हुसेइन, निकुमणि, समपादक, मामनि रइसम आभा आरु प्रतिभा, प्रथम संस्करण दृ2008, प्रकाशक– राजेन्द्र मोहन शर्मा, चन्द्र प्रकाश, पानबजार गुवाहाटी– 01, असम।
6. शर्मा, डॉ. गोविन्द प्रसाद, लेखक, नारीवाद आरु असमीया उपन्यास, संस्करण– 2011, प्रकाशक– असम प्रकाशन परिषद, गुवाहाटी– 21।